International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN:3049-2017
IJMH 2025; 2(5): 17-22
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 01-09-2025
Accepted: 11-09-2025
Publish : 13-09-2025

स्वालियाबेगम आर कोप्पल
शोधार्थी,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर– 586108.

Correspondence:
स्वालियाबेगम आर कोप्पल
शोधार्थी,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर– 586108.

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक संवेदना

स्वालियाबेगम आर. कोप्पल

सारांश

नासिरा शर्मा हिंदी साहित्य की प्रमुख उपन्यासकार हैं, जिनकी रचनाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाओं को गहराई से अभिव्यक्त करती हैं। उनके उपन्यास समाज में व्याप्त समस्याओं, परंपराओं और धार्मिक मूल्यों का सजीव चित्रण करते हैं। वे अपने पात्रों के बाहरी संघर्षों के साथ-साथ उनके आंतरिक विचारों और भावनाओं को भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। नासिरा शर्मा के लेखन में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाएँ आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं। वे समाज की जटिलताओं और उसमें रहने वाले लोगों के जीवन संघर्षों को इस प्रकार उकेरती हैं कि पाठक समाज, संस्कृति और धर्म के हमारे जीवन पर प्रभाव को लेकर गहन चिंतन करने को प्रेरित होता है। उनकी रचनाएँ यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि इन मुद्दों के संदर्भ में मानवता के प्रति हमारी जिम्मेदारियाँ क्या होनी चाहिए। अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने समाज की जटिल और विविध परतों को उजागर किया है। उनकी रचनाएँ न केवल जीवन की सच्चाइयों को सामने रखती हैं, बल्कि समाज में व्याप्त विषमताओं, अन्याय और मानवता के प्रति संवेदनहीनता पर गंभीर सवाल भी उठाती हैं। नासिरा शर्मा का साहित्य समाज की वास्तविकताओं को उजागर करने और पाठकों को सामाजिक चेतना से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

बीज शब्द
स्त्री संवेदना, परिस्थिति, शोषण, परंपरा, आधुनिक, दृस्टीकोण, छवि, प्रवृत्तिया पितृसत्तात्मक, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, समन्वय

सामाजिक संवेदना :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समाज की संरचना और उसमें व्याप्त भेदभाव, असमानता तथा संघर्षों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उनके पात्र समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों, जैसे महिलाएँ, अल्पसंख्यक और गरीब तबके, का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे अपने लेखन में गरीबी, महिला शोषण, जातिवाद, धार्मिक संघर्ष और सामाजिक असमानताओं जैसे विषयों को केंद्र में रखती हैं। महिलाओं के अधिकार, उनके प्रति अन्याय और समाज में उनकी स्थिति पर उनके उपन्यासों में विशेष रूप से विचार किया गया है। नासिरा शर्मा इस बात पर जोर देती हैं कि समाज की संरचना में महिलाओं की भूमिका कैसी है और वे किस प्रकार विभिन्न शोषणों का सामना करती हैं।

सामाजिक संवेदना का अर्थ है समाज में व्याप्त समस्याओं, अन्याय, असमानता और उत्पीड़न के प्रति गहरी समझ और सहानुभूति। यह एक ऐसी मानसिक और भावनात्मक संवेदनशीलता है, जो व्यक्ति या लेखक को समाज के वंचित और शोषित वर्गों की पीड़ा, संघर्ष और परिस्थितियों को महसूस करने और उन्हें अपने लेखन या विचारों के माध्यम से व्यक्त करने में सक्षम बनाती है। सामाजिक संवेदनशीलता से संपन्न लेखक वे होते हैं जो समाज के कमजोर, उपेक्षित और शोषित वर्गों की समस्याओं जैसे गरीबी, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, धार्मिक भेदभाव और सामाजिक असमानता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे इन बुराइयों को उजागर कर पाठकों को जागरूकता और सुधार के लिए प्रेरित करते हैं।

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों और कहानियों में स्त्री की सामाजिक परिस्थितियों को बड़ी संवेदनशीलता और गहराई से उकेरा है। उनके लेखन में स्त्री के संघर्ष, उसकी आकांक्षाएँ और उसकी स्थिति को प्रमुख स्थान दिया गया है। उन्होंने यह दिखाया है कि सामाजिक ढाँचे और परंपराएँ स्त्री के

जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं और वह इन कठिन परिस्थितियों के बीच भी अपने अस्तित्व की तलाश कैसे करती है।

स्त्री की सामाजिक परिस्थिति :

नासिरा शर्मा की रचनाएँ स्त्रियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से उकेरती हैं, जिनमें उनकी पहचान, स्वाधीनता और अधिकारों का विशेष उल्लेख होता है। उनके लेखन में उन समस्याओं को उजागर किया गया है, जिनसे महिलाएँ अक्सर अनजान रहती हैं, जैसे घरेलू हिंसा, सामाजिक दबाव और लैंगिक भेदभाव। नासिरा शर्मा ने अपने साहित्य के माध्यम से दिखाया है कि महिलाएँ परिवार और समाज के बीच संतुलन बनाने की प्रक्रिया में किस तरह की कठिनाइयों का सामना करती हैं और उनके संघर्ष कितने गहरे होते हैं।

उनकी रचनाओं में स्त्रियों की सामाजिक और मानसिक स्थितियों का सजीव और संवेदनशील चित्रण मिलता है। इससे पाठक न केवल स्त्रियों के संघर्षों को समझते हैं, बल्कि उनके आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की आवश्यकता को भी महसूस करते हैं। नासिरा शर्मा के लेखन से यह स्पष्ट होता है कि वे स्त्रियों के अधिकारों, उनकी स्वतंत्रता और उनकी पहचान के प्रति गहरी संवेदनशीलता रखती हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों में यह भाव स्पष्ट रूप से झलकता है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री से जुड़े कई ज्वलंत प्रश्न उठाए गए हैं, जिनका संबंध उसके अस्तित्व, आत्म-सम्मान और सामाजिक स्थिति से है। उनके लेखन में स्त्री के सामने आने वाली चुनौतियों और संघर्षों को गहराई से विश्लेषित किया गया है, खासकर उस समाज में जहाँ स्त्री को पारंपरिक सीमाओं में बांध दिया गया है। उनकी रचनाएँ इस बुनियादी सवाल को बार-बार उठाती हैं "औरत क्या है?" और आज की दुनिया में उसकी सही पहचान और स्थान क्या हैं? ये प्रश्न न केवल स्त्री के बाहरी जीवन से जुड़े हैं, बल्कि उसके आंतरिक संघर्ष और भावनाओं से भी संबंधित हैं।

उनके उपन्यास शाल्मली की नायिका शाल्मली इन सवालों को बार-बार उठाती है। उपन्यास में नरेश, शाल्मली का पति, उसे मात्र एक वस्तु या दासी समझता है, जिससे वह अपनी इच्छाएँ पूरी कर सके। शाल्मली का बार-बार अपमानित होना और निम्नतर स्थिति में रखा जाना दर्शाता है कि समाज में स्त्री को अभी भी बराबरी का स्थान नहीं दिया जाता।

अपमान और यातना की इस चरम सीमा पर पहुँचकर, शाल्मली अंततः कहती है, "मैं एक पल नहीं जी सकती इतना वहशीपन, इतना दुर्व्यवहार आखिर किस लिए? गुस्से से पागल सी हो गई शाल्मली। आंखे निकाल कर जैसे उसे अन्धे कुएं में किसी ने फेंक दिया हो। वह एक अजीव पीडा से छटपटा उटी थी। इस हद तक सम्बन्धों और भावनाओं को कोई अपमानित कर सकता है। इस हृद बका सिमा तक कोई निर्दय हो सकता है। इस सिमा तक कोई निर्दय हो सकता है। कहां आकर फंस गई है वह ! याह मेरा भाग्य है। हां मां यही कहती हैं कि याह तेरा भाग्य है। कारावास, यातना, अपमान, पीडा, छटपटाहट और एक बन्द गली का अन्धेरापन।"[1] यह संवाद शाल्मली के व्यक्तिगत दर्द को ही नहीं, बल्कि उस सामाजिक मानसिकता को भी दर्शाता है, जो स्त्रियों को सम्मान और गरिमा से जीने का अधिकार नहीं देती। नासिरा शर्मा का यह लेखन न केवल स्त्रियों के संघर्ष को सामने लाता है, बल्कि समाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे और उसकी क्रूरता पर गहरी चोट करता है।

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' में महरुख के चरित्र के माध्यम से समाज में स्त्री के अस्तित्व और उसकी पहचान से जुड़े गंभीर प्रश्न उठाए गए हैं। महरुख, जो एक स्वतंत्र सोच रखने वाली स्त्री है, शादी के बाद अपनी पहचान और अस्तित्व में बदलाव लाने की अपेक्षाओं पर प्रश्नचिन्ह लगाती है। उपन्यास में यह प्रश्न उठता है कि जब समर्पण और समन्वय स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक हैं, तो शादी के बाद केवल स्त्री से ही यह अपेक्षा क्यों की जाती है कि वह अपना अस्तित्व मिटाकर अपने पति के वजूद में खुद को मिला दे? महरुख इस परंपरा का विरोध करती है, जहाँ शादी के बाद एक स्त्री की पूरी दुनिया बदल जाती है। उसकी अम्मी, ताई, चाची और अन्य रिश्तेदार उसे समझाते हैं कि शादी के बाद जीवन में बहुत बदलाव आ जाते हैं और औरत को अपने पति के साथ समर्पित जीवन जीना पड़ता है। लेकिन महरुख इससे असहमत होते हुए खुद से सवाल करती है, "क्यों औरत को शादी के बाद अपना वजूद बदलना पड़ता है? हर औरत को शादी के बाद अपने को मिटाकर अपने वजूद को शौहर के वजूद में मिलाना पड़ता है। पता नहीं अम्मी शादी के पहले कैसी आदतों की होंगी रेश्मा भी बदल जाएगी फिर क्यों हमसे कहा जाता है कि इस तरह से रहना चाहिए, यह हमारे घर का रिवाज है और फिर एक दिन सब कुछ छोड़ कर अपने को नए सांचे में ढालना पड़ता है। आखिर क्यों ?"[2] यह सवाल न केवल महरुख के व्यक्तिगत संघर्ष को उजागर करता है, बल्कि समाज की उस सोच पर भी तीखा प्रहार करता है, जहाँ स्त्री से हमेशा किसी 'दूसरे' के अधीन रहने की अपेक्षा की जाती है। महरुख का यह प्रश्न समाज की उन परंपराओं को चुनौती देता है, जो शादी के बाद स्त्री की स्वतंत्र पहचान को गौण कर देती हैं।

नासिरा शर्मा ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व, उसकी पहचान और समाज में उसकी स्थिति पर गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में स्त्रियों की सामाजिक और मानसिक परिस्थितियों का अत्यंत सजीव और संवेदनशील चित्रण किया गया है। पाठक उनकी कहानियों के माध्यम से न केवल स्त्रियों के संघर्षों को समझते हैं, बल्कि उनके आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की आवश्यकता को भी गहराई से महसूस करते हैं।

नासिरा शर्मा के लेखन से यह स्पष्ट होता है कि वे स्त्री के अधिकारों, उसकी स्वतंत्रता और उसकी पहचान के प्रति गहरी संवेदनशीलता रखती हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों में यह भाव

प्रखर रूप से प्रतिबिंबित होता है, जो समाज की पारंपरिक सोच को चुनौती देते हुए स्त्री के लिए एक स्वतंत्र और सम्मानजनक स्थान की वकालत करते हैं।

यह प्रश्न कि, क्यों महिलाएं अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं नहीं ले सकतीं? याहमारा समाज क्यों हर बात या हर फैसले में महिलाओं को दोषी ठहराता है? ये नासिरा शर्मा की रचनाओं के केंद्र में रहते हैं। उनके लेखन में स्त्री के अधिकारों, उसकी स्वतंत्रता और उसकी आत्मनिर्भरता की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

स्त्री शोषण :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री शोषण को गहरी गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जिसमें पुरुषों को उच्च स्थान और महिलाओं को निम्न दर्जा दिया जाता है, का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। समाज में स्त्रियों को 'अवनत', 'भोग्य', 'ललना' और 'कामिनी' जैसी उपाधियों से विभूषित कर उनका शोषण और अधिक सशक्त रूप में उभरता है। उनके उपन्यासों में स्त्रियों के शोषण के विभिन्न रूपों को बेबाकी से उजागर किया गया है। नासिरा शर्मा के पात्र पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था का कड़ा विरोध करते हैं, जहाँ स्त्री की स्वतंत्रता और अधिकारों को लगातार नकारा जाता है। उनकी रचनाएँ स्त्रियों की आत्मा, उनके संघर्षों और उनकी आवाज़ को एक प्रमुख स्थान देती हैं। ये दर्शाती हैं कि स्त्री न केवल अपने अधिकारों के लिए लड़ने का साहस रखती है, बल्कि पितृसत्तात्मक ढाँचे को चुनौती देने की शक्ति भी। उनके उपन्यासों में शोषण के खिलाफ विद्रोह और स्त्री के संघर्ष समाज में व्याप्त असमानता को उजागर करते हैं। नासिरा शर्मा का यह संदेश स्पष्ट है कि समाज में स्त्रियों को बराबरी का स्थान मिलना चाहिए और उन्हें मात्र उपभोग की वस्तु के रूप में देखना घोर अन्याय है। उनकी लेखनी स्त्रियों के अधिकारों और अस्तित्व की लड़ाई को सशक्त स्वर प्रदान करती है, जो पाठकों को स्त्री शोषण के खिलाफ जागरूक और प्रेरित करता है।

उनके उपन्यास 'सात नदियाँ एक समंदर' में पुरुषों की संकीर्ण सोच और स्त्री के प्रति उनका रूढ़िवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से उभरता है। इस उपन्यास की नायिका तथ्यना एक क्रांतिकारी महिला है, जो अपने साथियों के साथ मिलकर समाज और राजनीति को बदलने के लिए प्रयासरत है। वह समाज में व्याप्त पुरुषवादी मानसिकता का डटकर सामना करती है। जब पुलिस उसके घर पर छापा मारती है और उसे क्रांतिकारियों के साथ खड़ी तस्वीर में देखती है, तो एक पासदार की टिप्पणी इस बात को उजागर करती है कि पुरुष समाज हमेशा से स्त्री को कमजोर, दब्बू और पिछड़े हुए रूप में देखना चाहता है।

नासिरा शर्मा के उपन्यास न केवल स्त्री संघर्षों का सजीव चित्रण करते हैं, बल्कि समाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे पर तीखा प्रहार करते हुए स्त्री के आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। पासदार कहता है "मर्दों के साथ आप इन तस्वीरों में अकेली खड़ी है और हमसे डर रही थी। हम भी मर्द हैं भेड़िये नहिं ।"[3] इस बात का सूचक है कि पुरुष स्त्री की उन्नति को एक हद तक ही स्वीकार करता है, लेकिन जब वह पुरूष के बराबर या उससे आगे बढ़ने लगती है, तो पुरूष का अहम उसे इसे बर्दाश्त नहीं करने देता। पुरूष सत्ता का समर्थक होता है और स्त्री की प्रगति में अवरोध पैदा करता है ताकि वह हमेशा पुरुष से नीचा रहे। इस प्रकार के विचार पुरूषों की पितृसत्तात्मक मानसिकता और सत्ता को बनाए रखने की प्रवृत्ति को दर्शाते हैं, जो स्त्री के आगे बढ़ने की राह में रुकावटें डालते हैं।

परम्परावादी स्त्री :

परंपरावादी नारी की अवधारणा के तहत स्त्रियों को समाज की स्थापित परंपराओं और रूढ़ियों के अनुसार ढालने का प्रयास किया जाता है। ऐसे समाज में स्त्री का अधिकांश जीवन परिवार और पति के इर्द-गिर्द ही सीमित रहता है, जहाँ उसकी स्वतंत्रता, आकांक्षाएँ और इच्छाएँ गौण मानी जाती हैं। उसकी पहचान उसके पति और परिवार से जुड़ी होती है और उसे समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर ही रहने के लिए बाध्य किया जाता है।

नासिरा शर्मा के उपन्यास बहिश्ते ज़हरा में परंपरावादी नारी की इसी सोच को बारीकी से दर्शाया गया है। उपन्यास की नायिका अपने पति को ही अपना सर्वस्व मानती है और अपने जीवन का आधार उसी में देखती है। पति के बिना जीवन की कल्पना उसके लिए असंभव है। यह नायिका परंपरावादी धारणाओं का प्रतीक है, जहाँ स्त्रियों को बचपन से ही इस तरह तैयार किया जाता है कि वे अपनी पहचान और अस्तित्व को केवल पति और परिवार के संदर्भ में ही देखती हैं।

बहिश्ते ज़हरा में नासिरा शर्मा ने दिखाया है कि किस प्रकार सामाजिक परंपराओं और रूढ़ियों ने स्त्रियों के जीवन को सीमित और संकुचित कर दिया है। समाज ने स्त्रियों के लिए ऐसी लकीर खींच दी है, जिसे पार करना उनके लिए कठिन ही नहीं, लगभग असंभव बना दिया गया है। इन परंपराओं और मान्यताओं की बेड़ियों में जकड़ी हुई स्त्रियाँ अपने जीवन में घुटन, अन्याय और शोषण को सहने के लिए विवश हो जाती हैं, क्योंकि उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं होता।

उपन्यास की नायिका एक ऐसी परंपरावादी स्त्री है, जो अपने सुख-दुख और अस्तित्व को पूरी तरह से अपने पति में समाहित कर देती है। उसका समर्पण इस सीमा तक है कि वह पति के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती। यह चरित्र समाज की उस सोच का प्रतीक है, जहाँ स्त्रियाँ अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और सपनों का बलिदान देकर केवल पति और परिवार के लिए अपना जीवन समर्पित कर देती हैं। नासिरा शर्मा ने इस स्थिति को उजागर कर न केवल स्त्रियों की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है, बल्कि समाज में व्याप्त उन रूढ़ियों पर भी सवाल उठाए हैं, जो स्त्रियों की स्वतंत्रता और पहचान को बाधित करती हैं। "मेरा सुख-संभार हुसैन के साथ है। तुम्हारे लिए इश्क सामाजिक सुख का नाम है। मेरे लिए इश्क का अर्थ आत्मा है। मैं इस संसार में केवल सुख और वैभव की दुनियावी तलाश में नहीं आई हूँ और न ही वह जीवन जीना चाहती हूँ। मेरे दामन में हुसैन फूल बन कर गिरा, उसे मैंने अपना वजूद दे डाला"[4]

यह उपन्यास उन स्त्रियों के जीवन और मानसिकता को उजागर करता है, जो परंपराओं और सामाजिक दायरों की बेड़ियों में जकड़ी हुई हैं और अपने व्यक्तिगत अस्तित्व को भुला देती हैं। ऐसी स्त्रियाँ अपनी पहचान और जीवन का सार केवल अपने पति या परिवार में ही देखती हैं और समाज द्वारा स्थापित इन परंपराओं का विरोध करने का साहस नहीं कर पातीं। नासिरा शर्मा ने इस तरह की स्त्रियों के भीतर की घुटन और संघर्ष को अत्यंत संवेदनशीलता और गहराई से प्रस्तुत किया है।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में महरुख, जो एक छोटे से गाँव में अध्यापिका की नौकरी करती है, इस स्थिति का एक सजीव उदाहरण है। उस गाँव की अधिकांश महिलाएँ परंपराओं में गहरी आस्था रखती हैं और इन परंपराओं के तहत अपने जीवन को ढालने में ही अपना कर्तव्य समझती हैं। महरुख को गाँव में अकेला व नौकरी करते देखकर गाँव की औरत कह उठती हैं कि "जरूर विधवा है, वरना इस उम्र, इस रूप को लेकर यूं नौकरी करने न निकलती।"[5] यह संवाद समाज में व्याप्त उस मानसिकता को उजागर करता है, जो स्त्री को स्वतंत्र रूप से काम करने या अकेले जीवन जीने की स्वीकृति नहीं देती। समाज की दृष्टि में, विशेष रूप से यदि कोई स्त्री अविवाहित है, उसका अकेला रहना या आत्मनिर्भर होना असामान्य माना जाता है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में परंपराओं और रूढ़ियों से जकड़ी हुई स्त्रियों के संघर्ष और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को अत्यंत सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है।

उनकी रचनाओं की स्त्रियाँ परंपराओं के जाल में बंधी होने के बावजूद अपने आत्मसम्मान और अस्तित्व की खोज में निरंतर संघर्ष करती रहती हैं। इस प्रकार के चरित्र समाज में मौजूद उस परंपरावादी सोच को बेनकाब करते हैं, जिसमें स्त्रियों की भूमिकाएँ पहले से निर्धारित होती हैं और उनके जीवन की दिशा पारंपरिक मान्यताओं द्वारा तय की जाती है। उनके पास अपने जीवन के निर्णय लेने का अधिकार नहीं होता और उन्हें परिवार या पति के अधीन रहने के लिए बाध्य किया जाता है। नासिरा शर्मा ने अपनी लेखनी के माध्यम से इस असमानता को उजागर करते हुए स्त्रियों की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों पर गहन प्रश्न उठाए हैं।

कामकाजी स्त्री :

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं की स्थिति का अत्यंत सजीव और यथार्थपरक वर्णन मिलता है। उनकी रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि कैसे महिलाएँ पारंपरिक भूमिकाओं से आगे बढ़कर कामकाजी बनती हैं और अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करती हैं। इसके साथ ही, वे समाज के उस दृष्टिकोण को भी सामने लाती हैं, जो ऐसी महिलाओं को संदेह और अविश्वास की नजर से देखता है।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में महरुख की कहानी इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। महरुख, जो एक छोटे से गाँव में अध्यापिका के रूप में काम करती है, समाज के पारंपरिक दायरों को तोड़कर अपना जीवन स्वतंत्र रूप से जीने का साहस करती है। गाँव की महिलाएँ, जो परंपरावादी मानसिकता से ग्रस्त हैं, उसे अविश्वास और तिरस्कार की नजर से देखती हैं। वे कहती हैं, 'जरूर विधवा है, वरना इस उम्र, इस रूप को लेकर यहाँ नौकरी करने न निकलती।' यह कथन समाज में कामकाजी महिलाओं के प्रति व्याप्त नकारात्मक दृष्टिकोण और उनकी स्वतंत्रता को लेकर फैली मानसिकता को उजागर करता है।

महरुख जैसी महिलाएँ, जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, अपने काम और व्यक्तिगत जीवन दोनों में कई प्रकार के संघर्षों का सामना करती हैं। समाज उनके निर्णयों पर प्रश्नचिह्न लगाता है और उनके कामकाजी होने को उनकी परंपरागत स्त्री पहचान के विपरीत मानता है। इसके बावजूद, महरुख जैसी नायिकाएँ सामाजिक दबावों का डटकर सामना करती हैं और स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान का प्रतीक बनकर उभरती हैं।

नासिरा शर्मा की अन्य रचनाएँ, जैसे 'बहिश्ते ज़हरा' और 'शाल्मली', भी कामकाजी महिलाओं के संघर्ष और साहस को बखूबी चित्रित करती हैं। 'शाल्मली' उपन्यास की नायिका शाल्मली एक ऐसी महिला है, जो अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बीच संतुलन बनाने के लिए जूझती है। वह अपने करियर के प्रति समर्पित है और आर्थिक आत्मनिर्भरता को अपने आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता का प्रतीक मानती है। जब उसका पति नरेश उससे नौकरी छोड़ने की अपेक्षा करता है, तो शाल्मली स्पष्ट रूप से इनकार कर देती है, क्योंकि उसका काम उसकी पहचान और स्वाभिमान का अभिन्न हिस्सा है।

नासिरा शर्मा का लेखन यह दिखाता है कि कामकाजी महिलाएँ न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की राह पर अग्रसर होती हैं, बल्कि समाज की परंपरागत सोच को चुनौती देकर अपने आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता के लिए भी संघर्ष करती हैं। उनकी ये नायिकाएँ महिलाओं के अधिकारों और उनकी पहचान की लड़ाई को स्वर प्रदान करती हैं, जिससे समाज में बदलाव की दिशा में सोचने की प्रेरणा मिलती है।"इस विभाग में आकर शाल्मली क व्यवस्था बढ़ गई थी। रोज कोई न कोई संमिनार होता। नई योजनाओं पर मीटिंग और एक दो दिन के दौरे। नए चेहरे नए लोग नया अनुभव और नई अनुभूतियां। किधर जाए, क्या- कितना समेटें। कभी-कभी शाल्मली उलझ जाती, मगर जबू दो घंटे थ शांति के मिल जाते, जाते, तो उसे घबराहट होने लगते कि इतना सन्नटा क्यों?"[6] शाल्मली अपनी पहचान कर अपने उद्देश्यों की प्राप्ती: अपनी सीमा वसामर्थ्य - की प्राप्ती के लिए संघर्षरत है। अपनी दिशा का निर्धारण स्वयं करती है। शाल्मली जैसी कामकाजी महिलाएँ परिवार और समाज से कई अपेक्षाओं का सामना करती हैं। वह अपने पति को पर्याप्त समय नहीं दे पातीं, जिससे उनके रिश्तों में तनाव आ जाता है। दफ्तर के काम का दबाव और सामाजिक अपेक्षाएँ उसे कभी-कभी अकेलापन महसूस कराती हैं। फिर भी, शाल्मली अपनी स्वतंत्र पहचान और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करती रहती है।

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं के जीवन की चुनौतियों और संघर्षों को बखूबी उकेरा है। उनकी रचनाओं में कामकाजी महिला दोहरी भूमिकाएँ निभाती है – एक

ओर वह घर की जिम्मेदारियाँ निभाती है, दूसरी ओर वह अपने करियर और पेशेवर दायित्वों को भी पूरा करती है। कामकाजी महिलाओं का यह चित्रण आधुनिक समाज की वास्तविकता को दर्शाता है, जहाँ महिलाएँ आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं, लेकिन उन्हें अभी भी पारिवारिक और सामाजिक सीमाओं के भीतर रहकर अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।
नासिरा शर्मा के उपन्यासों में कामकाजी महिला की छवि एक ऐसी स्त्री के रूप में उभरती है, जो अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए निरंतर संघर्ष करती है और समाज द्वारा लगाए गए बंधनों और पूर्वाग्रहों को चुनौती देती है।

आधुनिक स्त्री :

आज के समाज में आधुनिक नारी उन्नति, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन चुकी है। वह शिक्षित, स्वतंत्र विचारों वाली और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। आधुनिक नारी केवल परिवार तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में इस आधुनिक स्त्री की विशेषताओं को प्रमुखता से उजागर किया गया है। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में महरूख एक शिक्षित और स्वतंत्र सोच रखने वाली स्त्री के रूप में सामने आती है। जब उसके मंगेतर ने अमेरिका जाकर पीएचडी करने के बाद शादी करने का निर्णय लिया और फिर लौटकर माफी मांगी, तो महरुख ने उसे माफ नहीं किया। महरुख ने अपने जीवन में आगे बढ़ना और अपनी पहचान को समझना सीख लिया था। इस उपन्यास के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि आधुनिक स्त्री अपने आत्मसम्मान और अस्तित्व के प्रति पूरी तरह जागरूक होती है और वह किसी भी प्रकार के अन्याय को सहन नहीं करती, चाहे वह परिवार या समाज से ही क्यों न हो। इसी प्रकार 'कुईयांजान' उपन्यास में सूफिया अपनी माँ शकरआरा से कहती है कि "मुझे अभी शादी नहीं करनी है, मुझे आगे पढ़ना है।"[7] यह संवाद आधुनिक नारी की स्वतंत्रता, शिक्षा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता और अपनी शर्तों पर जीवन जीने की उसकी आकांक्षा को दर्शाता है।

आधुनिक स्त्री अपने अस्तित्व की पहचान करती है और समाज में समानता के लिए निरंतर संघर्ष करती है। वह केवल अपने करियर पर ही ध्यान नहीं देती, बल्कि सामाजिक और व्यक्तिगत मुद्दों पर भी अपनी स्पष्ट राय रखती है। यह नारी समाज को समृद्धि और समानता की ओर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यह संदेश दिया है कि आधुनिक नारी किसी भी प्रकार के बंधनों को स्वीकार नहीं करती और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है, चाहे वह सामाजिक हो या व्यक्तिगत।

स्त्री के प्रति पुरूष का दृष्टिकोण

स्त्री के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण समृद्धि, सम्मान और समानता पर आधारित होना चाहिए। समाज में स्त्रियों को भी पुरुषों के समान स्वतंत्रता, सहयोग और समर्थन का अधिकार मिलना चाहिए ताकि वे अपनी क्षमताओं को पहचान सकें और समाज के विकास में योगदान दे सकें। लेकिन पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण पुरुष अक्सर स्त्रियों को 'अबला', 'कामिनी', 'ललना', या 'योग्या' के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण स्त्री की स्वतंत्रता और उसके सपनों का सम्मान करने में विफल रहता है।

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में इस पुरुषवादी मानसिकता को बेनकाब किया है। 'जीरो रोड' में रामप्रसाद का दृष्टिकोण इसका स्पष्ट उदाहरण है। वह औरतों की तुलना बिल्ली के बच्चों से करता है और कहता है, "इन औरतों को अपने घर में चैन नहीं है। बिल्ली के बच्चों की तरह जब तक सात घर न झोंकेंगी, तो इनकी आँखें ही नहीं खुलेंगी।"[8] यह कथन पुरुष की उस संकुचित सोच को उजागर करता है, जो स्त्रियों को केवल घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित रखना चाहता है और उनके बाहर जाने या सामाजिक रूप से सक्रिय होने को स्वीकार नहीं करता।

'शाल्मली' उपन्यास में नरेश का दृष्टिकोण भी स्त्री के प्रति संकीर्ण और पारंपरिक है। वह शाल्मली की बुद्धि और क्षमताओं को मान्यता देने के बजाय उसे पारंपरिक भूमिकाओं में सीमित करना चाहता है। जब शाल्मली देर से ऑफिस से लौटती है या बिना बताए मायके जाती है, तो नरेश की प्रतिक्रिया इस सोच को स्पष्ट करती है। उसका कहना है, "मैंने तुम्हें नौकरी करने की छूट दी, इसका यह अर्थ नहीं कि तुम अपने को पूर्ण स्वतंत्र समझने लगी हो"[9] और "मैं मर्द हूँ, कहीं भी आ-जा सकता हूँ। तुम औरत हो और अपनी मर्यादा को पहचानो।"[10] ऐसे विचार यह दिखाते हैं कि नरेश स्त्री की स्वतंत्रता को केवल पुरुष के नियंत्रण के भीतर ही स्वीकार करता है।

नरेश का यह दृष्टिकोण, कि स्त्री केवल घरेलू कार्यों तक सीमित रहे और बुद्धि का प्रयोग न करे, पुरूष समाज में गहरे पूर्वाग्रह और असमानता को दर्शाता है। नरेश जैसे व्यक्तियों के लिए स्त्रियों की उन्नति उनके अहंकार और पारंपरिक सोच को चुनौती देती है। इस प्रकार, आधुनिक समाज में स्त्रियों की स्वतंत्रता का समर्थन केवल सतही प्रतीत होता है। जब नारी पुरूषों से आगे बढ़ने लगती है, तो कई पुरूष इसे अपने अहंकार के लिए चुनौती मानकर स्त्री की प्रगति में बाधा डालने की कोशिश करते हैं। यह स्थिति समाज में शक्ति के असमान वितरण और स्त्री की स्वतंत्रता को सीमित करने के प्रयास को उजागर करती है।

यह दृष्टिकोण बताता है कि पुरूष मानसिकता में आज भी पूर्ण बदलाव नहीं आया है, चाहे समाज कितना भी आगे बढ़ चुका हो। पुरूष अक्सर स्त्री की उन्नति को सहन नहीं कर पाते और उसे नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में यह विचार प्रमुखता से सामने आता है कि पुरूष समाज स्त्रियों को बराबरी का दर्जा देने से हिचकिचाता है और उनकी स्वतंत्रता में अवरोध उत्पन्न करता है। हालांकि, आधुनिक समाज में बदलाव की झलक अवश्य दिखती है, लेकिन यह बदलाव भी अक्सर स्वार्थपूर्ण प्रतीत होता है। पुरूष स्त्री के समान अधिकार और स्वतंत्रता को तभी स्वीकार करते हैं जब इससे उन्हें व्यक्तिगत लाभ होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, पुरूषों का दृष्टिकोण अभी भी संकीर्ण और नियंत्रित करने वाला है, जो स्त्रियों के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता को सीमित करता है। नासिरा शर्मा की लेखनी इन जटिलताओं को उजागर करते हुए समाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे पर गहरी चोट करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 नासिरा शर्मा, शाल्मली, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2018.-पृ.सं 40

2 नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2018.-पृ.सं 40-41

3 नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समंन्दर, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली –संस्करण-1995.,पृ.सं- 67

4 नासिरा शर्मा,बहिश्ते ज़हरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2009 – पृ.सं- 54

5 नासिरा शर्मा, ठिकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2018-पृ.सं-45

6 नासिरा शर्मा, शाल्मली, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2018-पृ.सं-135

7 नासिरा शर्मा, कुइयांजान, सामायिक प्रकाशन, नयी दिल्ली - 1995.–पृ.सं-67

8 नासिरा शर्मा, जीरारोड़, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, चतुर्थ संस्करण -2019-पृ.सं -21

9 नासिराशर्मा, शाल्मली, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2018.-पृ.सं 135

10 वही.-पृ.सं-135